सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, मई-जून, 2014

पवित्र आत्मा और आग से बपरिस्मा पाना।

'मैं तो तुम्हें पानी से मन-फिराव के लिए बपतिस्मा देता हूँ , परन्तु जो मेरे पश्चात्त आ रहा है - वह मुझ से इतना अधिक सामर्थी है कि मैं उसकी जूती भी उठाने के योग्य नहीं हूँ - वह स्वयं तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।' (मत्ती 3:11)

यहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मन-फिराव के बारे में बात कर रहा है। पश्चाताप मसीही जीवन का आरंभ है। मगर जब हम आगे बढ़ते है , अपने अंदर हम कूड़ा करकट पाते है। जिन मूर्तियों को हमने स्थान दिया था वे हमारे अंदर काफी मलिनता छोड़ जाती हैं।

'तब मैं तुम पर शुद्ध जल छिडकूंगा और तुम शुद्ध हो जाओगे, मैं तुम्हें तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूर्तियों से शुद्ध

पवित्र आत्मा और आग ... पृष्ठ 3 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

Star Utsav

चैनल पर

*हर **शनिवार सुबह 7:30 से 8:00** बजे*

मसीह का आत्मा

"प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है , क्यों कि यहोवा ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है , और मुझे इसलिए भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूं , कि बन्दियों के लिए स्वतन्त्रता का और कैदियों के लिए छुटकारे का प्रचार करूं; कि योहोवा के करूणा करने के समय और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूं। " (यशायाह 61:1-2a)

पवित्र वचन में चर्चित 'मसीह का आत्मा ' मेरा सारा ध्यान आकर्षित कर रहा था। मसीह के आत्मा की मुझे जरूरत है। मसीह का आत्मा, पाप से पूर्ण आजादी देता है। साधू सुन्दर सिंह [एक सिक्ख जवान जिसने यीशु के पीछे चलने का निर्णय लिया था] कहा करते थे , 'उद्धार केवल पापों से छुटकारा पाना ही नहीं बल्कि पाप से पूर्ण छुटकारा पाना है।' यह 'उद्धार' और 'पाप से आजादी' कितनी अनोखी है!

आदमी को यह जानना जरूरी है कि वह कुछ भी नहीं है और वह बेकार है। यह ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रार्थना मददगार है। यीशु से मिलने से पहले आदमी सोचता है कि वह एक महान व्यक्ति है और उसे और अधिक महान बनना है।

अपने निकम्मेपन को जानने के लिए यीशु के पास आना एक अच्छी बात है। एक आदमी जो प्रार्थना करता है वह जल्दी जान लेता है कि वह अपने आप कुछ नहीं कर पायेगा। यीशु भी उस स्तर पर पहूँचे थे : 'मैं स्वयं अपनी ओर से कुछ नहीं कर सकता। जैसा सुनता हूँ , वैसा न्याय करता हूँ , और मेरा न्याय सच्चा है; क्यों कि मैं अपनी नहीं , वरन अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूँ।' (यूहन्ना 5:30)

मेरे प्रिय मित्रों , आपके जीवन में जो अपको बाध्य करनेवाली आध्यात्मिक प्रेरणा और जो सकारात्मक दखल है, क्या वह हमेशा धीमा और मंद रहे ? नहीं। यीशु बन्दियों को आज़ादी और छुटकारा देते हैं। खुले दरवाजों वाला कैद कभी हो नहीं सकता। आप और मैं जो बन्दी थे , मसीह के आत्मा के द्वारा पूर्ण रूप से बंधन मुक्त और आजाद किये गये है। जब तक यह आपका दैनिक अनुभव न बने , तब तक आपको विश्राम नहीं लेना चाहिए।

इसके बाद 'हमारे परमेश्वर के पलटा लेना के दिन का प्रचार ' आता है। अब इसका

प्रचार करने के लिए हमें साहस की जरूरत है। हम में से कुछ लोग कायरों के दल बने है। इसलिए प्रचारक लोग भी सिर्फ यह कहते है , 'ओह परमेश्वर आपको आशीष देने वाले है। आप सिर्फ सौ रूपये अर्पण में डाल दो। उस से बस काम हो जायेगा।' मगर परमेश्वर कहते है, 'इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए और वहां तुझे स्मरण आए कि मेरे भाई को मुझ से शिकायत है , तो अपनी भेंट वेदी के सामने छोड़ दे और जाकर पहले अपने भाई से मेल कर ले और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा। ' (मत्ती 5 :23-24) मैं आजकल प्रचार करने वाले लोगों को भी ऐसा करते नहीं देख पा रहा हूँ। वे इधर कुछ बातें और उधर कुछ बातें जो दरार पैदा करती हैं छोडते जाते है। मगर मसीह जैसा आत्मा , आपको मसीह जैसा चरित्र देता है। जो गैर मसीही चरित्र है , वह चरित्र जो मूर्ति पूजा से उत्पन्न है , वह एक कुरूप चरित्र है जो सत्य और असत्य दोनों को मिला देता है।

परमेश्वर का , हर एक के लिए एक महान उद्देश्य है। 'तब वे प्रचीन खण्डहरों का जीर्णोद्धार करेंगे, वे पूर्वकाल के उजड़े स्थानों में घर खड़े करेंगे। और वे उन विनष्ट नगरों की मरम्मत करेंगे जो पीढ़ी से उजाड़ थे।' (यशायाह 61:4) पुरानी राहों के विषय में मुझे गहरा बोझ है। पर यह कहना लुभाऊ है, 'ठीक है, प्रचीन खण्डहरों की बात हम छोड़ दे।' मगर परमेश्वर चाहते है कि हमारे जीवन के कुछ कुछ प्रचीन खण्डहरों को वह शुद्ध करके पवित्र करें। शुद्धि पाने के लिए यह पहचान यह मान लेना जरूरी है कि कुछ बुराई की गयी है। परमेश्वर की तरफ मुड़ने की असली पहचान दैविक शोक है। संसारिक शोक तो रोग और मृत्यु उत्पन्न करता है। परन्तु परमेश्वर के इच्छानुसार जो दुख होता है पश्चाताप उत्पन्न करता है। उसको लेकर किसी भी तरह की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।

पुरानी उजड़ी राहों का पुनः निर्माण करना एक आसान काम नहीं है। अपने पूरे व्यक्तित्व को उस में लगाने की और आपके वश में जो सारा सामर्थ्य है उसे जुटाने की जरूरत है। विश्वविद्यालय की परीक्षाओं को लिखने के लिए कुछ लोग रात भर बैठ के पढ़ते हैं। जब शोध की बात आती है तो कुछ लोग खाना-पीन, नींद और अन्य जरूरतों को भुला बैठते है। अब एवरेस्ट शिखर को चढ़ने की बात आती है तो अस्सी साल के आदमी ने एवरेस्ट शिखर को पराजित किया था। और कृत्रिम आंगों के बल पर एक महिला ने ऐवरेस्ट शिखर चढ़ लिया था। परमेश्वर के लिए कुछ नहीं कर पाने का, देखो लोग कैसे कैसे बहाना बनाते है।

पुरानी राहों का निर्माण और प्रचीन खण्डहरों को पुनः खड़ा करना, सुस्त और निरूत्साही लोगों के बस की बात नहीं है। जब यरूशलेम की टूटी शहर पनाह के बारे में नहेमायाह ने सुना , तो वह 'बैठकर रोने लगा और कई दिन तक विलाप करता और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास व प्रार्थना करता रहा। ; (नहेमायाह 1:4) परमेश्वर के नाम के लिए वह कितना चिन्तित था। ईश-निन्दा के यह दिन है। उजड़े खण्डहरों को पुनः खड़ा करने के लिए हमें कहा गया है। क्या हम वैसा कर रहे है?

नहेमायाह (6 :15) में हम पढ़ते है कि टूटी पड़ी शहरपनाह का पुनः निर्माण किया गया। और यहूदियों ने यह काम सिर्फ बावन दिनों में पूरा किया था। वह आज कल के नौ इन्च वाले दीवार नहीं है। वे महाकाय और विशाल थे। ऐसी उजड़ी शहरपनाह को बनाना एक महान कार्य है ! जब एक दीवार की मरम्मत्त की जाती है तो नींव डालने से वह कामशुरु करना पड़ता है। उस में बहुत मेहनत लगानी पड़ती है। मगर उन्होंने उस काम को सिर्फ बावन दिनों में ही पूरा कर दिया ! उनकी एकता देखिये। उन दीवारों को जोड़ने की जरूरत थी। और कितना सूक्ष्मता की जरूरत रही होगी! जरा कल्पना

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

कीजिए कि उन लोगों ने मिलकर कितनी मेहनत की होगी।

संगीतकार कहते हैं , 'हे परमेश्वर, मेरा हृदय स्थिर है, मेरा हृदय स्थिर है। मैं गाऊँगा , हाँ, स्तुति के गीत गाऊँगा। (भजन संहिता 57 :7) स्थिर हृदय पाना एक महान आशीष है। ऐसा हृदय जो इस संसार से इश्कबाजी करता है वह कभी कुछ हासिल नहीं कर पायेगा। आजकल का सोच विचार यही है कि सब कुछ आराम दायक हो। सुरक्षा और आमदानी का आश्वासन हो। ऐसा विचार लिए उजड़े पड़े यरूशलेम के शहरपनाह को हम दुबारा नहीं बना पायेंगे। परमेश्वर के लिए महान कार्य करने, के एक सुस्थिर हृदय की आवश्यकता है।

हर जगह , लोग काम-चलाऊ राहत ही चाहते है। अगर एक व्यक्ति को सिर्फ किसी रोग से चंगा करो , तो वह वापस जा कर शैतान की सेवा करेगा। और बदतर रोग लेकर फिर आप के पास आयेगा। मेरे पिताजी कहा करते थे, 'मैं इधर तुम्हारे रोगों के चंगा करने के लिए नहीं हूँ कि तुम लोग वापस जाओ और शैतान की फिर सेवा करो। जब तक वे तीन दिन परमेश्वर का वचन सुन ना ले , वे उनकी चंगाई के लिए प्रार्थना नहीं करते थे। जब तीन दिन वे परमेश्वर का वचन सुनते तो साधारणतया वे पश्चाताप करने लगते। क्योंकि वे परमेश्वर के सत्य के सामने टिक नहीं पाते थे। वास्तव में, मेरे पिताजी को उनके लिए प्रार्थना करने की जरूरत ही नहीं पड़ती , क्योंकि अब तक परमेश्वर उनको पूरा पैक दे चुके होते - तन , मन और आत्मा पर उनका स्पर्श और अनुग्रह ! जब वे पश्चाताप करके यीशु की तरफ फिरे, उनके रोग भी प्रभु चंगा कर देते थे।

हमारे विद्यार्थी शिविर और, रिट्रीटों से गुजरें हमारे कई लड़की-लडकों की हालत को देख कर मुझे कितना दुख पहुँचता है ! उनका मन सुस्थिर नहीं है। संजीवन की आशीष दुनिया के हर कोने में वे ले जा सकते थे। मगर उन लोगों ने नहेमायाह के जैसे मन की आशा कभी नहीं की।

ऐसे समय क्या हम सिर्फ प्रेक्षक ही बने रहेंगे ? एक मसीही सिर्फ एक प्रेक्षक बन के नहीं रह सकता। सही बात है कि अमेरिका एक डूबता जहाज है। 'नाव डूबने से पहले मैं कुछ डालरो को बटोर लू।' ऐस मत कहो। अपने बेटे बेटियों को मानसिकता का कैसी प्रतिक्षण आप दे रहे हो ? जब वे वहाँ जाकर काम करने लगते है , ना ही वे अमेरिका के लिए रोते है और ना ही उस महान राज्य के पुनः निर्माण की खोज में लगते है। वे सिर्फ किराए पर मज़दूरी करने वालों का एक दल है। क्या आप ने ऐसे किराए के मज़दूरों को उत्पन्न किया है ? हमारे बच्चे ऊपर उठकर , इन उजड़े खण्डहरों को फिर से खड़ा करने वाले बनना है।

मेरे दोस्तों , सावधान रहो! हम इतिहास के उस काल में जी रहें है जब अंत बहुत नजदीक है। नाचने और इठलाने के लिए यह समय नहीं है। मगर पुराने उजाड़ो और प्रचीन खण्डहरों को फिर से बनाने का यह समय है। ऐसे करने के लिए परमेश्वर हमारी सहायता करें।

- जोशुआ दानिय्येल

पवित्र आत्मा और आग ... पृष्ठ 1 से

करूँगा। (यहेजकेल 36 :25) इस अशुद्धता से धुल जाना हमारे लिए जरूरी है। परमेश्वर ने इसका इन्तजाम भी कर रखा है। यीशु आपको पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देंगे।

जब यशायाह को परमेश्वर के आमने-सामने लाया गया, उन्होंने अपने आप को बहुत अयोग्य पाया। तब वह पुकार उठा कि वह एक अशुद्ध होंठवाला मनुष्य है। उसे शुद्ध किये जाने की जरूरत थी। और परमेश्वर ने अपने भव्य सिंहासन के सामने स्थित वेदी पर से अंगारा ले उसे शुद्ध किया था।

अपने मुंह से शाश्वत वचन बोलने के लिए हमारे होंठ योग्य नहीं हैं। ऐसी मलिनता से हमें शुद्ध करने के लिए परमेश्वर समर्थ है।

मन-फिराव के समय आपको लगता है कि आप एक आशाहीन पापी हो। मन-फिराव के बाद, दुबारा आप ऐसा महसूस करोगे, जब परमेश्वर की उपस्थिति और उनका वचन , आपके अंदर जमे कूड़े करकट को आप के सामने अनावृत करे , तो आप दुबारा निर्भिक महसूस करोगे। क्या हम परमेश्वर के वचन का प्रचार करने योग्य है ? नहीं, हम में बहुत कूड़ा करकट है। मगर उससे शुद्ध करने का , परमेश्वर ने प्रबन्ध किया है। जब पवित्र आत्मा और पवित्र आत्मा की आग हम में प्रवेश करती है , तो वह सारी अशुद्धता दूर हो जाती है।

मगर केवल एक ही बार ऐसा अनुभव काफी नहीं है। जब कोई वैवाहिक जिम्मेवारी में प्रवेश

करता है तो उसे और बढ़कर आग से शुद्ध किये जाने की अवश्यकता है। फिर जब उसके बच्चे पैदा होते हैं तो फिर उस आग का एक और स्पर्श जरूरी है। यह विनम्र भाव हम में बना रहे और वह अपना कार्य हम में करता रहे। हम एकाग्र बने रहे। यीशु ने पतरस से गहरे जल में प्रवेश करके प्रयास करने के लिए कहा। अध्यात्मिक जीवन में हमें भी गहराई में जाकर तब दाहिने ओर जाल डालना है। इसका अर्थ यही कि परमेश्वर की जहाँ इच्छा हो, वहाँ हम अपना जाल डालें। परमेश्वर यह देख रहे है कि एक उच्च स्तरीय जीवन जीने की क्या हम में आशा है। - जो यीशु का जीवन है!

लगता है कि यशायाह और एलिय्याह में ऐसी इच्छा है जो पूरी भी हुई। परमेश्वर ने उनकी इच्छा पूरी की। एक गहरे अध्यात्मिक जीवन से आशीषित करने के लिए , परमेश्वर हमारी व्यक्तिगत श्रद्धा और समर्पण को बहुत ध्यान से देख रहे हैं।

- एन.दानिय्येल।

मौत का सामना

कोरी टेन बूम, हालैण्ड की निवासी (डच) थी। एक छोटे से अफ्रीकी राज्य में उन्होंने एक बार कुछ समय बिताया था। नई सरकार के कारण, वहाँ के मसीही बहुत दबाव सह रहे थे। कोरी का वहाँ रहने के, कुछ पहले दिनों में , स्थानीय ईसाईयों को पुलिस स्टेशन में पंजीकरण के लिए बुलाया गया था। असलियत में उनको गिरफ्तार करके, उनको मार डाला गया था ; क्रमबद्ध उनका निर्मूलन हो रहा था।

रविवार सुबह , एक छोटी सी चर्च (गिरजाघर) में कोरी को संदेश देना था। हर एक के चहरे पर भय और तनाव स्पष्ट झलक रहा था। अगली बार किसको मार डाला जायेगा, किसको मालूम है?

उस विषम समय पर , कोरी के मुँह से परमेश्वर का वचन सुनने के लिए , गद्दी रहित काठ के बेंच पर बैठे सभी ईसाई , उनकी तरफ बहुत आस लगाये देख रहे थे।

उन अनमोल भाइयों को , कोरी ने बाइबल से , 1 पतरस (4:12-14) का प्राचीन आंग्ल भाषा के सुन्दर संस्करण से पढ़कर सुनाया। 'हे प्रियो , यह दुख-रूपी अग्नि-परीक्षा जो तुम्हारे मध्य इसलिए आई कि तुम्हारी परख हो - इसे यह समझकर अचम्भा न करना कि कोई अनोखी घटना तुम पर घट रही है। परन्तु जैसे तुम मसीह के दुखों में सहभागी होते रहते हो , आनन्दित रहो , जिससे कि उसकी महिमा के प्रकट होते समय भी तुम आनन्द से उल्लसित हो जाओ। यदि मसीह के नाम के कारण तुम्हारी निन्दा की जाती है तो तुम धन्य हो , क्योंकि महिमा का आत्मा , जो परमेश्वर का आत्मा है , तुम में वास करता है। ' तब कोरी ने उनको एक कहानी सुनाई : 'जब मैं एक छोटी लड़की थी ,' उन्होंने कहा, 'मैं अपने पिताजी के पास गयी और कहा, 'पिताजी, मुझे डर है कि यीशु मसीह के लिए शहीद बनने जितनी समर्थ मैं कभी नहीं बन पाऊँगी। ' 'मुझे यह बताओ ,' पिताजी ने कहा , 'जब तुमको हॉर्लेम से एमस्टरडाम जाने के लिए रेलगाडी में , सफर के लिए निकल पड़ती हो , तो टिकट के लिए मैं कब तुमको पैसे देता हूँ ? क्या तीन हफ्ते पहले?'

'नहीं, पिताजी, ट्रेन में चढ़ने से पहले आप मुझे टिकट के लिए पैसे देते हो।'

उनके पिताजी सहमत हुए, 'परमेश्वर का सामर्थ्य भी उसी तरह है। हमारे ज्ञानी पिताजी जो स्वर्ग में है जानते है कि कब तुम को उन चीजों की जरूरत पड़ेगी। शहीद बनने की सामर्थ्य की आज तुमको जरूरत नहीं है ; मगर यीशु के लिए जान देने , उस गौरव का बुलावा आते ही , ठीक समय पर , जिस ताकत की तुम्हें जरूरत है वह तुम्हें देंगे।'

कोरी जानती थी कि उन अफ्रीकी भाई बहनों में से कुछ लोग मौत का सामना कर रहें है।

सत्य की परख!

'यहोवा की शरण लेना मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है। यहोवा की शरण लेना प्रधानों पर भी भरोसा रखने से उत्तम है। ' (भजन संहिता 118:8,9)

उन्होंने आगे कहा , 'मेरे पिताजी की सलाह से मुझे बहुत तसल्ली मिली। बाद में युद्ध शिविर में मुझे यीशु के लिए बहुत कष्ट सहना पड़ा। निश्चित ही , जो साहस और सामर्थ्य की जरूरत थी, परमेश्वर ने मुझे दिया।'

उनके अफ्रीकी दोस्त भी सहमत थे , यह जानते हुए कि परमेश्वर उनके सारी जरूरतों को पूरा करेंगे - मृत्यु का सामना करने का साहस समेत।

'और आगे बताओ टेन्ट (आन्ट) कोरी, 'एक बुजुर्ग आदमी, ने कहा। तब कोरी ने उनको , रेवेन्सब्रूक के युद्ध शिविर में घटी एक घटना कह सुनाई।

एक दिन , कोरी के कुछ सह कैदियों के समूह ने , उन से बाइबल की कहानियाँ सुनना चाहा। उस युद्ध शिविर के पहरेदार बाइबल को 'झूठ की किताब' कहते थे। किसी भी कैदी के पास अगर बाइबल मिल जाए या प्रभु के बारे में बात करते पकड़ा जाए तो उस को मौत का सामना करना पड़ता , फिर भी कोरी अपने बिस्तर के पास जाकर बाइबल ले कर आई।

अचानक उसे अपने पीछे किसी अस्तित्व का आभास हुआ। 'एक कैदी ने , ' कोरी ने अपनी अफ्रीकी श्रोताओं से कहा , ' अपने होठों से फुस फुसाया , अपनी बाइबल को छिपाओं , पीछे लोनी है।' लोनी पेहरेदारों में अत्यंत क्रूर महिला पहरेदार थी। मगर कोरी जानती थी कि उसे परमेश्वर की आज्ञा माननी है। उस सुबह उन कैदियों को संदेश देने की , परमेश्वर ने स्पष्ट अगुवाई की है। कोरी जब इस तरह पढ़ा रही थी , लोनी पीछे खड़ी रही - जब कोरी ने सुझाव दिया कि सब लोग एक स्तुति का गीत गएंगे, तब भी वह पीछे खेड़ी ही रही। हाँलाकि वह दूसरे कैदियों के लिए बहुत महंगा साबित हो सकता था , शत्रु का सामना करते भी , सबने गाना गाया।

गीत समाप्त होते किसी ने कुछ कहा। वह लोनी थी। एक और ऐसा गाना गाने के लिए कहा था। कोरी और दूसरे कैदियों ने मिलकर फिर गाया। तब कोरी ने उस औरत से प्रभु यीशु मसीह के बारे में बात की। उसका व्यवहार बदलने लगा, जब तक न वह एक दोस्त की तरह पेश आने लगी थी। कोरी ने अपने अफ्रीकी दोस्तों से कहा , 'मैं जानती थी कि हर शब्द जो मैंने कहा था मेरे लिए मौत साबित हो सकता था , फिर भी मेरे शत्रु के सामने जब मैं बाइबल का संदेश दे रही थी , उस से पहले मैंने अपने हृदय में ऐसा आनन्द और शान्ति कभी महसूस नहीं की है। जो जरूरी अनुग्रह और सामर्थ्य, परमेश्वर ने मुझे दी - टिकट के लिए जरूरी पैसे गाड़ी में चढ़ने से पहले ठीक समय पर मिल गये।

कोरी के उन अफ्रीकी भाइयों के मुंह पर मुस्कराहट छा गया। तब उसने उस सभा का , ऐमी कारमैइकल की एक पद सुनाकर अंत कियाः

"*जख्मों के निशान धर , वह महान,*
जिसके पीछे चले हम , वही कप्तान।
क्या हम भी न पाये , उनके जैसे निशान,
जिसके पीछे चले हम , वही महान।
उसके निर्दोष आदेशों के तेहत,
चले हम युद्ध करने यत।
ऐसा न हो की हम भूल जाये,
हाथ-पैर दिखाना प्रभु , जब हम मिले।"

सभा के अंत में , कोइ उस पुराना गाना, गाने लगेः

"हम विश्वास से एक देश देखते है
जो इस पृथ्वी से है शोभायमान
वहाँ यीशु कर रहा तैयार
मेरे लिये एक रहने का स्थान
थोड़ी देर में वहां प्यारों जाके हम सब मिलेंगे
थोड़ी देर में वहां प्यारों जाके हम सब मिलेंगे"

बाद में , कोरी को यह समाचार मिला कि उस सभा में उपस्थित लोगों में , आधे से भी ज्यादी लोग मसीह के लिए शहीद हो गये - और शहीदों का मुकुट प्राप्त किये। मगर महिमा का आत्मा, जो परमेश्वर का आत्मा है, उन में वास करते साफ दिखाई दिया। (1 पतरस 4:14)

- कोरी टेन बूम , 'ट्राम्प फर दा लॉर्ड' से चुनीहुई।

सम्पत्ति का खालीपन

'परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन संचय करो , जहां न कीड़ा और न जंग नष्ट करते हैं और न ही चोर सेंध लगा कर चोरी करते हैं, क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।' (मत्ती 6: 20, 21)

एक सबसे धनवान व्यक्ति जो शक्तशाली बना और उसका प्रभाव ब्रिटिश साम्राज्य पर था उसका नाम सिसिल रोड्स था। हो सकता है कि आप रोड्स स्कॉलरशीप (वजीफे) के विषय भली भांति जानते हो , कि संसार के विशिष्ट विलक्षण छात्रों को दो वर्ष के लिए लंदन के ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में मुफ्त पढ़ाई की सुविधा दी जाती है। 27 वर्ष की उम्र में, रोड्स ने दक्षिण अफ्रिका में दी बीयर्स माइनिंग कम्पनी की स्थापना की। आठ सालों के संक्षिप्त समय में उन्होंने डायमंड माइनिंग इन्डस्ट्री को अपने नियंत्रण में ले लिया।

पांच वर्षो के बाद , गोल्ड

माइनिंग कारखाना उनका हो गया। 36 साल की उम्र में , कैप कॉलोनी के प्रधान मंत्री बन गए। वे एक उत्कृष्ट धनी थे कि उनकी मृत्यु होने पर ब्रिटिश साम्राज्य की पैतृक सम्पत्ति जैसे रोडेशिया का पूरा देश उनका था जो जर्मनी , फ्रांस और स्पेन के इलाके के बराबर था!

शायद एक सबसे गरीब , फिर भी इंगलैंड के सबसे खुशहाल व्यक्ति थे, जनरल विलियम बूथ , जो 'साल्वशन आर्मी' के संस्थापक थे। जनरल बूथ और सिसिल रोड्स दोनों एक दूसरे से भली भांति परिचित थे। एक अवसर पर, जनरल बूथ ने सिसिल रोड्स से एक आश्चर्यजनक प्रश्न पूछा , 'मि. रोड्स, क्या आप एक खुश से भरे व्यक्ति हैं ?' रोड्स ने उसका उत्तर दिया, 'नहीं।'

दोनों के जीवन में कैसी विषमता थी कि जिनका जीवन विपरीत कारणों से प्रेरित था। एक था जो अपने स्वार्थ पर केन्द्रित होकर अपार धन राशि जमा कर रहा था ! और दूसरे व्यक्ति का हृदय परमेश्वर के द्वारा नियंत्रित था और जो संसार में जरूरतमंदों को जीवन देता था!

यीशु ने कहा , 'जो पुत्र पर विश्वास करता है , अनन्त जीवन उसका है।' यूहन्ना (3 :36) हमारी परिपूर्णता हमारे स्वार्थ से बाहर खोजनी चाहिए। यह यीशु मसीह में मिलेगी। हम हर समय अपनी इच्छाओं और सपनों को पूरा करने के प्रयास में रहते हैं और वो भी अपनी ताकत से, उन चीजों को पाने के बाद हम पाते हैं कि हम अब भी खालीपन में हैं। यह मसीह है, जो जीवन का देता है, जो हमारे खालीपन के जीवन को बहुतायत के जीवन से भर देते हैं ताकि हम दूसरों के लिए जीएं , अपनी भलाई और उनकी महिमा के लिए जीयें।

"मुक्तिदाता के लिए प्रेम - डेविड लिविंगस्टन"

10 नवंबर, सन् 1871, के दिन न्यूयोर्क हेराल्ड अखबार के सम्वाददाता हेन्री स्टानली ने डेविड लिविंगस्टन से अफ्रीकी झील तन्गनइका के तट पर मिलते हुए अभिवादन में यह कहा "डेविड लिविंगस्टन, मेरा मानना है कि..."

विश्वविख्यात मिशनरी लिविंगस्टन जिसने जांबेजी नदी, विक्टोरिया जलप्रपात और नील नदी के स्त्रोत, इन सब की खोज की थी। अब सालों से उनका कोई अतापता नहीं था, मान्यता थी कि वह अब जीवित नहीं हैं।

संशयवादी स्टानली, उनको खोजने निकल पड़े। स्टानली उनकी कहानी भी लिखना चाह रहे थे।

उन्होंने डॉ. लिविंगस्टन की विशेषताओं का इस तरह बखान किया:

"ऐसा आदमी जो स्वर्गीय सहायता के सहारे जीता है और जिसके जीवन में स्वर्गीय प्रभाव का नियंत्रण साफ झलकता है।

उनके जीवन मे .... उत्साह, निसन्देह मसीह से आता है। तो ज़रूर मसीह का अस्तित्व है।"

डेविड लिविंगस्टन के पत्रों, किताबें और जर्नल ने दास-प्रथा के उन्मूलन के लिए, लोगों के अन्दर एक गहरी पुकार पैदा कर दी।

अपने लेखों में डेविड लिविंगस्टन ने एक घटना का इस तरह उल्लेख किया: *"हमने रास्ते पर पड़ी एक दासी को देखा या जो गोली मार कर या छुरा भोंखकर मार दी गयी थी। देखने वालों ने कहा कि वह दासी आगे चल नही पा रही थी। उसको मोल लेने में जो पैसा बरबाद होते देखकर गुस्से में मालिक ने उसे मार डाला।"*

न्यूयोर्क हेरल्ड के संपादक को लिए एक पत्र में डेविड लिविंगस्टन लिखते है:

"अगर मेरे लिखे लेखों के कारण, उझीजैन में प्रचलित भयानक दास-प्रथा और पूर्वतटीय क्षेत्रों के गुलामों की खरीद-बेच बन्द हो गई तो इसे मैं नील नदी के स्त्रोतों की खोज से भी बढ़कर अधिक महत्वपूर्ण बातमानूँगा।"

अफ्रीकी वासियों को लिविंगस्टन से इतना लगाव था की सन् 1873 में, भंगवीलू नामक झील के निटक, मलेरिया से पीडित लिविंगस्टन, अपने बिस्तर के बगल में अपने घुटनों पर ही मरा हुआ पाया गया, तब उनके अनुयाइयों ने, नमक से बांधे उनका शव को इग्लैंड वापस भेजने से पहले, उनके दिल को निकाल कर अफ्रीका में ही दफनाया। इग्लैंड के वेस्टमिनस्टर ऐबी में उनको दफनाया गया।

अपनी दैनिक पंजी में लिविंगस्टन ने लिखा:

"जो मेरे पास है और जो मेरे पास होगा, मेरे लिए उनका कोई महत्व नही। सिवाय उस चीज़ के जो मसीह के राज्य से जुड़ी हो। अगर किसी चीज़ के रखने से उनका राज्य आगे बढ़ता है तो वह चीज़ रखी जाऐगी, यदि किसी चीज़ के देने से उनका राज्य आगे बढ़ता है तो वह दे दी जाएगी। ऐसे देने या रखने से परमेश्वर की महिमा करना ही मेरा लक्ष्य है, जिन पर आज से लेकर अनन्तकाल तक मेरी आशा लगी है। "

सन् 1857 दक्षिण अफ्रिका

में मिशनरी यात्राओं और अनुसंधान के दौरान डॉ. लिविंगस्टन ने अपनी प्रेरणा को इस तरह प्रतिबिम्बित किया:

"अपने सारे अपराधों की माफी परमेश्वर की पुस्तक (बाईबल) में जिस तरह दी गई है, यह बात मुझ में, लहु से हमे मोल लेने वाले उस उद्धारकर्ता के प्रति गहरा प्यार पैदा करती है। मुझ पर उनके अनुग्रह के कारण, उनके प्रति आभारी होने का गहरा एहसास, तब से लेकर हमेशा, मेरे आचारण को प्रभावित करता आया है।"

-बिल फेड़रर अमारिकन मिनट

यीशु मसीह के द्वारा उद्धार

जब यीशु इस पृथ्वी पर थे , उन्होंने कहा , 'क्योंकि परमेश्वर जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो , परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)

यही सुसमाचार है - यीशु मसीह का शुभ समाचार!

'क्योंकि परमेश्वर ने ' - जिन्होंने उत्कृष्ट प्रेम दिखाया है।

जगत से - जो सबसे विशाल संख्या है।

ऐसा प्रेम किया - जो सब से भारी परिमाण है।

कि अपना एकलौता पुत्र - जो सब से महत्तम तोहफा है।

उसने दे दिया - जो एक बृहत्कार्य है।

कि जो कोई - जो एक बृहत्तर संभावना है।

उस पर - जो नित्य एक महान आकर्षण है।

विश्वास करे - जो हमेशा से ही अत्यंत सरल है।

वह नाश न हो - जो सबसे महान प्रतिज्ञा है।

परन्तु - जो एक बड़ा अंतर है।

अनन्त जीवन पाये - जो सदा के लिए महत्वपूर्ण आधिपत्य है।

मत्ती अध्याय 5 - पवित्र बाईबल

1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया ; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।
2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,
3 धन्य हैं वे , जो मन के दीन हैं , क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
4 धन्य हैं वे , जो शोक करते हैं , क्योंकि वे शांति पाएंगे।
5 धन्य हैं वे , जो नम्र हैं , क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
6 धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं , क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।
7 धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।
8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं , क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
9 धन्य हैं वे , जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।
10 धन्य हैं वे , जो धर्म के कारण सताए जाते हैं , क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
11 धन्य हो तुम , जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें , और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हरो विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें।
12 आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था॥
13 तुम पृथ्वी के नमक हो ; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए , तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इस के कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।
14 तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता।
15 और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है।
16 उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें॥
17 यह न समझो , कि मैं व्यवस्था था भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं।
18 लोप करने नहीं , परन्तु पूरा करने आया हूं, क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।
19 इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा , वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।
20 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं , कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे॥